



जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य

जगद्गुरु रामभद्राचार्य (संस्कृत: जगद्गुरु रामभद्राचार्यः) (१९५०-), पूर्वश्रम नाम गिरिधर मिश्र (संस्कृत: गिरिधरमिश्रः), रामानन्द सम्प्रदाय के वर्तमान चार जगद्गुरु रामानन्दाचार्यों में से एक हैं, और इस पद पर १९८८ ई से प्रतिष्ठित हैं। वे चित्रकूट, उत्तर प्रदेश स्थित तुलसी पीठ नामक धार्मिक और सामाजिक सेवा संस्थान के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। वे चित्रकूट स्थित **जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय** के संस्थापक और आजीवन कुलपति हैं। यह विश्वविद्यालय केवल चतुर्विध विकलांग विद्यार्थियों को स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम और डिग्री प्रदान करता है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य दो मास की आयु में नेत्र की ज्योति से रहित हो गए थे और तभी से प्रज्ञाचक्षु हैं। बहुभाषाविद् होने के साथ वे संस्कृत, हिन्दी, अवधी, मैथिली सहित कई भाषाओं में आशुक्वि हैं। उन्होंने ८० से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों की रचना की है, जिनमें महाकाव्य, खण्डकाव्य, और **प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता और प्रधान उपनिषदों) पर संस्कृत भाष्य** सम्मिलित हैं। जगद्गुरु वल्लभाचार्य (१६वीं शताब्दी ई) के बाद वे संस्कृत में प्रस्थानत्रयी पर भाष्य रचने वाले प्रथम आचार्य हैं।

जन्म एवं प्रारम्भिक जीवन

माता शचीदेवी और पिता पण्डित राजदेव मिश्र के पुत्र जगद्गुरु रामभद्राचार्य का जन्म एक वसिष्ठगोत्रिय सरयूपारीण ब्राह्मण परिवार में भारत के उत्तर प्रदेश राज्य के जौनपुर जिले के शांडिखुर्द नामक ग्राम में हुआ। माघ कृष्ण एकादशी विक्रम संवत् २००६ (तदनुसार १४ जनवरी १९५० ई), मकर संक्रान्ति की तिथि को रात के १०:३४ बजे बालक का प्रसव हुआ। उनके पितामह पण्डित सूर्यबली मिश्र की एक चचेरी बहन मीराबाई की भक्त थीं, और मीराबाई अपने काव्यों में श्रीकृष्ण को गिरिधर नाम संबोधित करते थीं, अतः उन्होंने नवजात बालक को गिरिधर नाम दिया।

दृष्टि बाधन

गिरिधर की नेत्रदृष्टि दो मास की अल्पायु में नष्ट हो गयी। मार्च २४, १९५० के दिन बालक की आँखों में रोहे हो गए। गाँव में आधुनिक चिकित्सा उपलब्ध नहीं थी। बालक को एक वृद्ध महिला चिकित्सक के पास ले जाया गया जो रोहे की चिकित्सा के लिए जानी जाती थी। चिकित्सक ने गिरिधर की आँखों में रोहे के दानों को फोड़ने के लिए गरम द्रव्य डाला, परन्तु रक्तस्राव के कारण गिरिधर के दोनों नेत्रों की ज्योति चली गयी। आँखों की चिकित्सा के लिए बालक का परिवार उन्हें सीतापुर, लखनऊ और मुम्बई स्थित विभिन्न आयुर्वेद, होमियोपैथी और पश्चिमी चिकित्सा के विशेषज्ञों के पास लेके गया, परन्तु गिरिधर के नेत्रों का उपचार न हो सका। गिरिधर मिश्र तभी से प्रज्ञाचक्षु हैं। वे न तो पढ़ सकते हैं, और न ही लिख सकते हैं, और न ही ब्रेल लिपि का प्रयोग करते हैं। वे केवल सुनकर सीखते हैं और बोलकर लिपिकारों द्वारा अपनी रचनाएँ लिखवाते हैं।

प्रथम काव्य रचना

गिरिधर के पिता मुम्बई में कार्यरत थे, अतः उनका प्रारम्भिक अध्ययन घर पे पितामह की देख-रेख में हुआ। दोपहर में उनके पितामह उन्हें रामायण, महाभारत, विश्रामसागर, सुखसागर, प्रेमसागर, ब्रजविलास आदि काव्यों के पद सुना देते थे। तीन वर्ष की आयु में गिरिधर ने अवधी में अपनी सर्वप्रथम कविता रची और अपने पितामह को सुनाई। इस कविता में यशोदा माता एक गोपी को श्रीकृष्ण से लड़ने के लिए उलाहना दे रही हैं।

मेरे गिरिधारी जी से काहे लरी ॥

तुम तरुणी मेरो गिरिधर बालक काहे भुजा पकरी ॥

सुसुकि सुसुकि मेरो गिरिधर रोवत तू मुसुकात खरी ॥

तू अहिरिन अतिसय झगराऊ बरबस आय खरी ॥

गिरिधर कर गहि कहत जसोदा आँचर ओट करी ॥

गीता और रामचरितमानस का ज्ञान

एकश्रुत प्रतिभा से युक्त बालक गिरिधर ने अपने पड़ोसी पण्डित मुरलीधर मिश्र की सहायता से पाँच वर्ष की आयु में मात्र पन्द्रह दिनों में श्लोक संख्या सहित सात सौ श्लोकों वाली सम्पूर्ण भगवद्गीता कण्ठस्थ कर ली। १९५५ ई में जन्माष्टमी के दिन उन्होंने सम्पूर्ण गीता का पाठ किया। संयोगवश गीता कण्ठस्थ करने के ५२ वर्ष बाद २००७ ई में जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने भगवद्गीता के सर्वप्रथम ब्रेल लिपि में अंकित संस्करण का विमोचन किया। सात वर्ष की आयु में गिरिधर ने अपने पितामह की सहायता से छन्द संख्या सहित सम्पूर्ण श्रीरामचरितमानस साठ दिनों में कण्ठस्थ कर ली। १९५७ ई में रामनवमी के दिन व्रत के दौरान उन्होंने मानस का पूर्ण पाठ किया। कालान्तर में गिरिधर ने समस्त वैदिक वाङ्मय, संस्कृत व्याकरण, भागवत, प्रमुख उपनिषद्, संत तुलसीदास की सभी रचनाओं और अन्य अनेक संस्कृत

और भारतीय साहित्य की रचनाओं को कण्ठस्थ कर लिया।

उपनयन और कथावाचन

गिरिधर मिश्र का उपनयन संस्कार निर्जला एकादशी के दिन जून २४, १९६१ ई को हुआ। अयोध्या के पण्डित ईश्वरदास महाराज ने उन्हें गायत्री मन्त्र के साथ-साथ राममन्त्र की दीक्षा भी दी। भगवद्गीता और रामचरितमानस का अभ्यास अल्पायु में ही कर लेने के बाद गिरिधर अपने गाँव के समीप अधिक मास में होने वाले रामकथा कार्यक्रमों में जाने लगे। दो बार कथा कार्यक्रमों में जाने के बाद तीसरे कार्यक्रम में उन्होंने रामचरितमानस पर कथा प्रस्तुत की, जिसे कई कथावाचकों ने सराहा।

औपचारिक शिक्षा

उच्च विद्यालय

७ जुलाई १९६७ के दिन जौनपुर स्थित आदर्श गौरीशंकर संस्कृत महाविद्यालय से गिरिधर मिश्र ने अपनी औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ की। मात्र एक बार सुनकर स्मरण करने की अद्भुत क्षमता होने के कारण उन्होंने कभी भी ब्रेल लिपि या अन्य साधनों का सहारा नहीं लिया। तीन महीनों में उन्होंने वरदराजाचार्य विरचित ग्रन्थ लघुसिद्धान्तकौमुदी का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर लिया। चार वर्ष तक अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद उच्चतर शिक्षा के लिए वे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय गए।

शास्त्री (स्नातक) तथा आचार्य (स्नातकोत्तर)

१९७१ में गिरिधर मिश्र वाराणसी स्थित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृत व्याकरण में स्नातक डिग्री की पढ़ाई के लिए प्रविष्ट हुए। स्नातक शिक्षा के दौरान १९७३ में अखिल भारतीय संस्कृत अधिवेशन में भाग लेने गिरिधर मिश्र नयी दिल्ली आए। अधिवेशन में व्याकरण, सांख्य, न्याय, वेदान्त और अन्त्याक्षरी में उन्होंने पाँच स्वर्ण पदक जीते। उनकी योग्यताओं से प्रभावित होकर भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्रिणी श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने उन्हें आँखों की चिकित्सा के लिए संयुक्त राज्य अमरीका भेजने का प्रस्ताव रखा, परन्तु गिरिधर मिश्र ने सादर यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। १९७३ और १९७६ में क्रमशः गिरिधर ने शास्त्री (स्नातक) और आचार्य (स्नातकोत्तर) परिक्षाएँ उत्तीर्ण कीं और दोनों में सर्वप्रथम स्थान के साथ स्वर्ण पदक प्राप्त किए। हालाँकि उन्होंने केवल व्याकरण में डिग्री के लिए पंजीकरण किया था, उनके चतुर्मुखी ज्ञान के लिए विश्वविद्यालय ने उन्हें विश्वविद्यालय में अध्यापित सभी विषयों का आचार्य घोषित किया।

विद्यावारिधि (पी एच डी) एवं वाचस्पति (डी लिट्)

आचार्य की उपाधि पाने के पश्चात् गिरिधर मिश्र विद्यावारिधि (पी एच डी) की उपाधि के लिए इसी विश्वविद्यालय में

पण्डित रामप्रसाद त्रिपाठी के निर्देशन में शोधकार्य के लिए पंजीकृत हुए। उन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से शोध कार्य के लिए अध्येतावृत्ति भी मिली, परन्तु आगामी वर्षों में अनेक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। संकटों के बीच उन्होंने अक्टूबर १४, १९८१ को संस्कृत व्याकरण में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि (पी एच डी) की उपाधि अर्जित की। उनके शोधकार्य का शीर्षक था अध्यात्मरामायणे अपाणिनीयप्रयोगानां विमर्शः और इस शोध में उन्होंने अध्यात्म रामायण में पाणिनीय व्याकरण से असम्मत प्रयोगों पर विमर्श किया। विद्यावारिधि उपाधि प्रदान करने के बाद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्हें सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभाग के अध्यक्ष के पद पर भी नियुक्त किया। लेकिन गिरिधर मिश्र ने इस नियुक्ति को अस्वीकार कर दिया और अपना जीवन धर्म, समाज और विकलांगों की सेवा में लगाने का निर्णय लिया।

१९९७ में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय ने उन्हें उनके शोधकार्य अष्टाध्याय्याः प्रतिसूत्रं शाब्दबोधसमीक्षणम् पर वाचस्पति (डी लिट्) की उपाधि प्रदान की। इस शोधकार्य में गिरिधर मिश्र नें अष्टाध्यायी के प्रत्येक सूत्र पर संस्कृत के श्लोकों में टीका रची है।

विरक्त दीक्षा और तदनन्तर जीवन

तुलसी पीठ

१९७६ में गिरिधर मिश्र ने करपात्री महाराज को रामचरितमानस पर कथा सुनाई। स्वामी करपात्री ने उन्हें विवाह न करने, आजीवन ब्रह्मचारी रहने और किसी वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा लेने का उपदेश दिया। गिरिधर मिश्र ने नवम्बर १९, १९८३ के कार्तिक पूर्णिमा के दिन रामानन्द सम्प्रदाय में श्री श्री १००८ श्री रामचरणदास महाराज फलाहारी से विरक्त दीक्षा ली। अब गिरिधर मिश्र रामभद्रदास नाम से आख्यात हुए। १९८७ में उन्होंने चित्रकूट में एक धार्मिक और समाजसेवा संस्थान तुलसी पीठ की स्थापना की, जहाँ रामायण के अनुसार श्रीराम ने वनवास के १३ वर्ष बिताए थे। इस पीठ की स्थापना हेतु साधुओं और विद्वज्जनों ने उन्हें श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर की उपाधि से अलंकृत किया।

जगद्गुरुत्व

जगद्गुरु सनातन धर्म में प्रयुक्त एक उपाधि है जो पारम्परिक रूप से वेदान्त दर्शन के उन आचार्यों को दी जाती है जिन्होंने प्रस्थानत्रयी (ब्रह्मसूत्र, भगवद्गीता और मुख उपनिषद्) पर संस्कृत में भाष्य रचा है। मध्यकाल में भारत में कई प्रस्थानत्रयीभाष्यकार हुए थे यथा शंकराचार्य, निम्बार्काचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य, रामानन्दाचार्य और अंतिम थे वल्लभाचार्य (१४७९ से १५३१ ई)। वल्लभाचार्य के पश्चात् पाँच सौ वर्षों तक संस्कृत में प्रस्थानत्रयी पर कोई भाष्य नहीं लिखा गया।

जून २४, १९८८ ई के दिन काशी विद्वत् परिषद् वाराणसी ने रामभद्रदास का तुलसीपीठस्थ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के रूप में चयन किया। ३ फ़रवरी १९८९ को प्रयाग में महाकुंभ में रामानन्द सम्प्रदाय के तीन अखाड़ों के महन्तों, सभी

सम्प्रदायों, खालसों और संतों द्वारा सर्वसम्मति से काशी विद्वत् परिषद् के निर्णय का समर्थन किया गया। इसके बाद १ अगस्त १९९५ को अयोध्या में दिगंबर अखाड़े ने रामभद्रदास का जगद्गुरु रामानन्दाचार्य के रूप में विधिवत अभिषेक किया। अब रामभद्रदास का नाम हुआ जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य।

इसके बाद उन्होंने ब्रह्म सूत्र, भगवद्गीता, और ११ उपनिषदों (कठ, केन, माण्डूक्य, ईशावास्य, प्रश्न, तैत्तिरीय, ऐतरेय, श्वेताश्वतर, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और मुण्डक) पर संस्कृत में श्रीराघवकृपाभाष्य की रचना की। नारद भक्ति सूत्र और रामस्तवराजस्तोत्र पर भी जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने श्रीराघवकृपाभाष्य रचा। इन भाष्यों का प्रकाशन १९९९ और २००० ई में हुआ। वे पहले ही नारद भक्ति सूत्र और रामस्तवराजस्तोत्र पर संस्कृत में राघवकृपाभाष्य की रचना कर चुके थे। इस प्रकार स्वामी रामभद्राचार्य ने ५०० वर्षों में पहली बार संस्कृत में प्रस्थानत्रयीभाष्यकार बनकर लुप्त हुई जगद्गुरु परम्परा को पुनर्जीवित किया और रामानन्द सम्प्रदाय को स्वयं रामानन्दाचार्य द्वारा रचित आनन्दभाष्य के बाद प्रस्थानत्रयी पर दूसरा संस्कृत भाष्य दिया।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय

१९९२ में स्वामी रामभद्राचार्य ने दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए एक विद्यालय की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने केवल विकलांग विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु एक संस्थान की स्थापना का निर्णय लिया। इस उद्देश्य के साथ उन्होंने सितम्बर २७, २००१ को चित्रकूट, उत्तर प्रदेश, में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय की स्थापना की। इस विश्वविद्यालय को उत्तर प्रदेश सरकार के प्रदेश अधिनियम ३२ (२००१) द्वारा मान्यता दी गयी, और इसी अधिनियम द्वारा स्वामी रामभद्राचार्य को इस विश्वविद्यालय का जीवन पर्यन्त कुलपति नियुक्त किया गया। यह विश्वविद्यालय संस्कृत, हिन्दी, आङ्ग्लभाषा, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान, संगीत, चित्रकला (रेखाचित्र और रंगचित्र), ललित कला, विशेष शिक्षण, प्रशिक्षण, इतिहास, संस्कृति, पुरातत्त्वशास्त्र, संगणक और सूचना विज्ञान, व्यावसायिक शिक्षण, विधिशास्त्र, अर्थशास्त्र, अंग-उपयोजन और अंग-समर्थन के क्षेत्रों में स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टर की उपाधियाँ प्रदान करता है। विश्वविद्यालय में केवल चार प्रकार के विकलांग – दृष्टिबाधित, मूक-बधिर, अस्थि-विकलांग (पंगु अथवा भुजाहीन), और मानसिक विकलांग – छात्रों को प्रवेश की अनुमति है, जैसा कि भारत सरकार के विकलांगता अधिनियम १९९५ में व्याख्याित है। मार्च २०१० में विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में कुल ३५४ विद्यार्थियों को विभिन्न उपाधियाँ प्रदान की गयीं।

अयोध्या मसले में साक्ष्य

जुलाई २००३ में जगद्गुरु रामभद्राचार्य इलाहाबाद उच्च न्यायालय के सम्मुख अयोध्या विवाद के अपर मूल अभियोग संख्या ५ के अंतर्गत धार्मिक मामलों के विशेषज्ञ के रूप में साक्षी बनकर प्रस्तुत हुए (साक्षी संख्या ओ पी डब्लु १६)। उनके शपथ पत्र और जिरह के कुछ अंश अंतिम निर्णय में उद्धृत हैं। अपने शपथ पत्र में उन्होंने सनातन धर्म के प्राचीन

शास्त्रों (वाल्मीकि रामायण, रामतापनीय उपनिषद्, स्कन्द पुराण, यजुर्वेद, अथर्ववेद, इत्यादि) से उन छन्दों को उद्धृत किया जो उनके मतानुसार अयोध्या को एक पवित्र तीर्थ और श्रीराम का जन्मस्थान सिद्ध करते हैं। उन्होंने तुलसीदास की दो कृतियों से नौ छन्दों (तुलसी दोहा शतक से आठ दोहे, और कवितावली से एक कवित्त) को उद्धृत किया जिनमें उनके कथनानुसार अयोध्या में मन्दिर तोड़ने और का विवादित स्थान पर मस्जिद के निर्माण का वर्णन है। प्रश्नोत्तर के दौरान उन्होंने रामानन्द सम्प्रदाय के इतिहास, उसके मठों, महन्तों के विषय में नियमों, अखाड़ों की स्थापना और संचालन, और तुलसीदास की कृतियों का विस्तृत वर्णन किया। मूल मन्दिर के विवादित स्थान के उत्तर में होने के प्रतिपक्ष द्वारा रखे गए तर्क का निरसन करते हुए उन्होंने स्कन्द पुराण के अयोध्या महात्म्य में वर्णित राम जन्मभूमि की सीमाओं का वर्णन किया, जो कि न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल द्वारा विवादित स्थल के वर्तमान स्थान से मिलती हुई पायी गयीं।

रामचरितमानस की प्रामाणिक प्रति

गोस्वामी तुलसीदास ने १०,००० से अधिक छन्दों से युक्त रामचरितमानस की रचना १६वीं शताब्दी ई में करी थी। ४०० वर्षों में उनकी यह कृति उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय बन गयी, और इसे पाश्चात्य भारतविद् बहुशः उत्तर भारत की बाइबिल कहते हैं। इस काव्य की अनेकों प्रतियाँ मुद्रित हुई हैं, जिनमें वेंकटेश्वर प्रेस और खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन आदि पुरानी प्रतियाँ, और गीता प्रेस, मोतीलाल बनारसीदास, कौदोराम, रामेश्वर भट्ट, ज्वालाप्रसाद, कपूरथला और पटना से मुद्रित नयी प्रतियाँ सम्मिलित हैं। मानस पर अनेक टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं, जिनमें मानसपीयूष, मानसगूढार्थचन्द्रिका, मानसमयंक, विनायकी, विजया, बालबोधिनी इत्यादि सम्मिलित हैं। बहुत स्थानों पर इन प्रतियों और टीकाओं में छन्दों की संख्या, मूलपाठ, प्रचलित वर्तनियों (यथा अनुनासिक प्रयोग), और प्रचलित व्याकरण नियमों (यथा विभक्त्यन्त स्वर) में भेद हैं। कुछ प्रतियों में एक आठवाँ काण्ड भी परिशिष्ट के रूप में मिलता है, जैसे कि मोतीलाल बनारसीदास की प्रति में। २०वीं शताब्दी में वाल्मीकि रामायण और महाभारत का विभिन्न प्रतियाँ के आधार पर सम्पादन और प्रामाणिक प्रति (critical edition) का मुद्रण क्रमशः बड़ौदा स्थित महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय और पुणे स्थित भण्डारकर प्राच्य शोध संस्थान द्वारा किया गया था, परन्तु रामचरितमानस पर ऐसा कार्य नहीं हुआ था।

स्वामी रामभद्राचार्य बाल्यकाल से रामचरितमानस की ४००० आवृत्तियाँ कर चुके हैं। उन्होंने ५० प्रतियों के पाठों पर आठ वर्ष अनुसन्धान करके एक प्रामाणिक प्रति का सम्पादन किया। इस प्रति को तुलसी पीठ संस्करण के नाम से मुद्रित किया गया। आधुनिक प्रतियों की तुलना में तुलसी पीठ प्रति में मूलपाठ में कई स्थानों पर अंतर है - मूल पाठ के लिए स्वामी रामभद्राचार्य ने पुरानी प्रतियों को अधिक विश्वसनीय माना है। इसके अतिरिक्त वर्तनी, व्याकरण और छन्द सम्बन्धी प्रचलन में आधुनिक प्रतियों से तुलसी पीठ प्रति निम्नलिखित प्रकार से भिन्न है।

- गीता प्रेस सहित आधुनिक प्रतियाँ २ पंक्तियों में लिखित १६-१६ मात्राओं के चार चरणों की इकाई को एक चौपाई मानती हैं। जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने एक पंक्ति में लिखित ३२ मात्राओं की इकाई को एक चौपाई माना है, जिसके समर्थन में उन्होंने हनुमान चालीसा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा पद्मावत की समीक्षा के

उदाहरण दिए हैं। उनके अनुसार इस व्याख्या में भी चौपाई के चार चरण निकलते हैं क्योंकि हर १६ मात्राओं की अर्धाली में ८ मात्राओं के बाद यति है।

- कुछ अपवादों (पादपूर्ति इत्यादि) को छोड़कर तुलसी पीठ की प्रति में आधुनिक प्रतियों में प्रचलित कर्तृवाचक और कर्मवाचक पदों के अन्त में उकार के स्थान पर अकार का प्रयोग है। स्वामी रामभद्राचार्य के मतानुसार उकार का पदों के अन्त में प्रयोग त्रुटिपूर्ण है, क्योंकि ऐसा प्रयोग अवधी के स्वभाव के विरुद्ध है।
- तुलसी पीठ की प्रति में विभक्ति दर्शाने के लिए अनुनासिक का प्रयोग नहीं है जबकि आधुनिक प्रतियों में ऐसा प्रयोग बहुत स्थानों पर है। जगद्गुरु के अनुसार पुरानी प्रतियों में अनुनासिक का प्रचलन नहीं है।
- आधुनिक प्रतियों में कर्मवाचक बहुवचन और मध्यम पुरुष सर्वनाम प्रयोग में संयुक्ताक्षर न्ह और म्ह के स्थान पर तुलसी पीठ की प्रति में क्रमशः न और म का प्रयोग है।
- आधुनिक प्रतियों में प्रयुक्त तद्भव शब्दों में उनके तत्सम रूप के तालव्य शकार के स्थान पर सर्वत्र दन्त्य सकार का प्रयोग है। तुलसी पीठ के प्रति में यह प्रयोग वहीं है जहाँ सकार के प्रयोग से अनर्थ या विपरीत अर्थ न बने। उदाहरणतः सोभा (तत्सम शोभा) में तो सकार का प्रयोग है, परन्तु शंकर में नहीं क्योंकि जगद्गुरु रामभद्राचार्य के अनुसार यहाँ सकार कर देने से वर्णसंकर के अनभीष्ट अर्थ वाला संकर पद बन जाएगा।

साहित्यिक कृतियाँ

जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने ८० से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों की रचना की है, जिनमें से कुछ प्रकाशित और कुछ अप्रकाशित हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं।

काव्य और नाटक

महाकाव्य

- श्रीभार्गवराघवीयम् (२००२) – इक्कीस सर्गों, चालीस संस्कृत और प्राकृत के छन्दों, और २१२१ वृत्तों में विरचित संस्कृत महाकाव्य। कवि द्वारा ही रचित हिन्दी टीका सहित। इसका वर्ण्य विषय परशुराम और राम की लीला है। इस रचना के लिए रामभद्राचार्य को २००५ में संस्कृत का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- अष्टावक्र (२०१०) – आठ सर्गों और ८६४ वृत्तों में रचित हिन्दी महाकाव्य। यह महाकाव्य अष्टावक्र ऋषि के जीवन का वर्णन है, जिन्हें विकलांगों के पुरोधा के रूप में दर्शाया गया है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- अरुन्धती महाकाव्य – १५ सर्गों में ऋषि वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती पर रचित हिन्दी महाकाव्य। राघव साहित्य प्रकाशन निधि, राजकोट द्वारा प्रकाशित।

खण्डकाव्य

- आजादचन्द्रशेखरचरितम् – स्वतन्त्रता सेनानी चन्द्रशेखर आज़ाद पर संस्कृत में रचित काव्य (गीतादेवी मिश्र

द्वारा रचित हिन्दी टीका सहित)। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

- लघुरघुवरम् – संस्कृत भाषा के केवल लघु वर्णों में रचित संस्कृत खण्डकाव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- सरयूलहरी – अयोध्या से प्रवाहित होने वाली सरयू नदी पर संस्कृत में रचित खण्डकाव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- भृङ्गदूतम् (२००४) – दो भागों में विभक्त और मन्दाक्रान्ता छन्द में निबद्ध ५०१ वृत्तों में रचित संस्कृत दूतकाव्य। दूतकाव्यों में कालिदास का मेघदूतम्, वेदान्तदेशिक का हंससन्देशः और रूप गोस्वामी का हंसदूतम् सम्मिलित हैं। भृङ्गदूतम् में किष्किन्धा में प्रवर्षण पर्वत पर रह रहे श्रीराम का एक भँवरे के माध्यम से लंका में रावण द्वारा अपहृत माता सीता को भेजा गया सन्देश वर्णित है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- काका विदुर – महाभारत के विदुर पात्र पर विरचित हिन्दी खण्डकाव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

नाटककाव्य

- श्रीराघवाभ्युदयम् – श्रीराम के अभ्युदय पर संस्कृत में रचित एकांकी नाटक। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- उत्साह – हिन्दी नाटक। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

पत्रकाव्य

- कुब्जापत्रम् – संस्कृत में रचित पत्रकाव्य। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

गीतकाव्य

- राघव गीत गुंजन – हिन्दी में रचित गीतों का संग्रह। राघव साहित्य प्रकाशन निधि, राजकोट द्वारा प्रकाशित।
- भक्ति गीत सुधा – भगवान् श्रीराम और भगवान् श्रीकृष्ण पर रचित ४३८ गीतों का संग्रह। राघव साहित्य प्रकाशन निधि, राजकोट द्वारा प्रकाशित।
- गीतरामायणम् - (२०११) – सम्पूर्ण रामायण की कथा को वर्णित करने वाला लोकधुनों की ढाल पर रचित १००८ संस्कृत गीतों का महाकाव्य। यह महाकाव्य ३६-३६ गीतों से युक्त २८ सर्गों में विभक्त है। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

रीतिकाव्य

- श्रीसीतारामकेलिकौमुदी (२००८) – १०९ वृत्तों के तीन भागों में विभक्त प्राकृत के छः छन्दों में और ३२७ वृत्तों में विरचित हिन्दी (ब्रज, अवधी और मैथिली) भाषा में रचित रीतिकाव्य। काव्य का वर्ण्य विषय बाल रूप श्रीराम और माता सीता की लीलाएँ हैं। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

शतककाव्य

- श्रीरामभक्तिसर्वस्वम् – १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य जिसमें रामभक्ति का सार वर्णित है। त्रिवेणी धाम, जयपुर द्वारा प्रकाशित।
- आर्याशतकम् – आर्या छन्द में १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य। अप्रकाशित।
- चण्डीशतकम् - चण्डी माता को अर्पित १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य। अप्रकाशित।
- राघवेन्द्रशतकम् – श्री राम की स्तुति में १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य। अप्रकाशित।
- गणपतिशतकम् – श्री गणेश पर १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य। अप्रकाशित।
- श्रीराघवचरणचिह्नशतकम् – श्रीराम के चरणचिह्नों की प्रशंसा में १०० वृत्तों में रचित संस्कृत काव्य। अप्रकाशित।

स्तोत्रकाव्य

- श्रीगङ्गामहिम्नस्तोत्रम् – गंगा नदी की महिमा का वर्णन करता संस्कृत काव्य। राघव साहित्य प्रकाशन निधि, राजकोट द्वारा प्रकाशित।
- श्रीजानकीकृपाकटाक्षस्तोत्रम् – सीता माता के कृपा कटाक्ष का वर्णन करता संस्कृत काव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- श्रीरामवल्लभास्तोत्रम् – सीता माता की प्रशंसा में रचित संस्कृत काव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- श्रीचित्रकूटविहार्यष्टकम् – आठ वृत्तों में श्रीराम की स्तुति करता संस्कृत काव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- भक्तिसारसर्वत्रम् – संस्कृत काव्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।
- श्रीराघवभावदर्शनम् – आठ शिखरिणी वृत्तों में उत्प्रेक्षा अलंकार के माध्यम से श्रीराम की उपमा चन्द्रमा, मेघ, समुद्र, इन्द्रनील, तमालवृक्ष, कामदेव, नीलकमल और भ्रमर से देता संस्कृत काव्य। कवि द्वारा ही रचित अवधी कवित्त अनुवाद और खड़ी बोली गद्य अनुवाद सहित। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित।

सुप्रभातकाव्य

- श्रीसीतारामसुप्रभातम् – चालीस वृत्तों (८ शार्दूलविक्रीडित, २४ वसन्ततिलक, ४ स्रग्धरा और ४ मालिनी) में रचित संस्कृत सुप्रभात काव्य। कवि द्वारा रचित हिन्दी अनुवाद सहित। जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट द्वारा प्रकाशित। कवि द्वारा ही गाया हुआ काव्य संस्करण युकी कैसेट्स, नयी दिल्ली द्वारा विमोचित।

भाष्य और टीकाएँ

संस्कृत भाष्य

- श्रीनारदभक्तिसूत्रेषु श्रीराघवकृपाभाष्यम् – नारद भक्ति सूत्र पर संस्कृत में रचित भाष्य। श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित।

- [illegible]

- महावीरी - हनुमान् चालीसा पर हिन्दी में रचित टीका।
- भावार्थबोधिनी – श्रीरामचरितमानस पर हिन्दी में रचित टीका।
- श्रीराघवकृपाभाष्य – श्रीरामचरितमानस पर हिन्दी में नौ भागों में विस्तृत टीका। रच्यमान।

पुरस्कार और सम्मान

जगद्गुरु रामभद्राचार्य को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जिनमें प्रमुख निम्नलिखित हैं।

विरक्त दीक्षा के उपरान्त

- २०११। हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से देवभूमि पुरस्कार।
- २००८। श्रीभार्गवराघवीयम् के लिए के के बिरला संस्थान की ओर से श्री वाचस्पति पुरस्कार।
- २००६। जयदयाल डालमिया श्री वाणी ट्रस्ट की ओर से श्री वाणी अलंकरण पुरस्कार।
- २००६। संस्कृत बोर्ड भोपाल की ओर से बाणभट्ट पुरस्कार।
- २००५। श्रीभार्गवराघवीयम् के लिए संस्कृत में साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- २००४। भारत के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम द्वारा बादरायण पुरस्कार।
- २००३। मध्य प्रदेश संस्कृत अकादमी की ओर से राजशेखर सम्मान।
- २००३। लखनऊ स्थित भाऊराव देवरस सेवा न्यास की ओर से भाऊराव देवरस पुरस्कार।
- २००३। उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान की ओर से अतिविशिष्ट पुरस्कार।
- २००३। दीवालीबेन मेहता चैरीटेबल ट्रस्ट द्वारा धर्म और संस्कृति में प्रगति के लिए दीवालीबेन मेहता पुरस्कार।
- २००२। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, की ओर से कविकुलरत्न की उपाधि।
- २००१। लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नयी दिल्ली की ओर से महामहोपाध्याय।
- १९९८। विश्व धर्म संसद द्वारा धर्मचक्रवर्ती की उपाधि।

पूर्वाश्रम में प्राप्त

- १९७६-७७। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में आचार्य की परीक्षा में स्वर्ण पदक।
- १९७५। अखिल भारतीय संस्कृत वाद विवाद प्रतियोगिता में कुलपति स्वर्ण पदक।
- १९७३। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में शास्त्री की परीक्षा में स्वर्ण पदक।